

7. समय की पाबन्दी

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है- “का बरषा जब कृषि सुखाने।” खेती सूखकर नष्ट हो गई, अब यदि मेह बरसा तो किस काम का। आपका प्रयत्न, आपका परिश्रम तभी सफल होगा, यदि आप उसे समय पर करेंगे। आपने देर की, आप चूके कि बात बिगड़ी। हर काम का समय होता है, हर बात का समय होता है जो लोग समय को नष्ट करते हैं, समय उन को नष्ट कर देता है। जो समय को बचाते हैं- उसका पूरा-पूरा उपयोग करते हैं-समय उन्हें बचा लेता है।

आप एक बार अपनी आदत बना लीजिए कि मैं कभी किसी काम को अगले दिन के लिए टालने का यत्न नहीं करूँगा, आज का काम आज ही समाप्त कर दूँगा। फिर देखिए कि आपके पास कितना समय बच जाता है और सारे काम कितने अच्छे ढंग से पूरे होते हैं। समय पर काम करने वाला मनुष्य समय गँवाकर काम करने वाले की अपेक्षा दुगुना-चौगुना काम कर लेता है। हममें कुछ ऐसी ढिलाई आ गई है, आदतें कुछ ऐसी बिगड़ी हैं कि हम नियम पालन को एक झंझट समझते हैं। शाम के चार बजे एक सभा होने वाली है। व्याख्या देने वाले महाशय जी को ठीक चार बजे व्याख्यान करने के लिए कह रखा है। जलसे के प्रोग्राम का ढिंढोरा पिटवा दिया गया है।

ठीक चार बजे लोग आ गए। किन्तु व्याख्यान दाता महाशय का कुछ पता नहीं। प्रबन्धकों की परेशानी का अनुमान लगाइए। वे बार-बार माइक पर आकर जनता से कहते हैं-बस, अब प्रोग्राम शुरू होने वाला है। वक्ता महानुभाव आते हैं आधे घण्टे बाद। वह समझते हैं कि हमारी बड़ाई इसी में है कि लोग बेचैनी से इन्तजार करें। प्रबन्धक परेशान हों। और फिर देर बाद जब वे आएँ, लोग उनके लिए पलकें बिछा दें। ऐसा विचार केवल मूर्खता प्रकट करता है।

कुछ छात्र कभी समय पर पाठशाला नहीं पहुँचते समय पर काम नहीं करते हैं। समय पर पुस्तकालय की पुस्तकें नहीं लौटाते। बस या गाड़ी पर कहीं जाना हो तो समय पर नहीं पहुँचते जब देखें, तभी लेट। ऐसे लोगों को जब देखो, भागते नज़र आएंगे। पर शायद वे नहीं जानते कि “दौड़ना बेकार है।” मुख्य बात तो समय पर निकलना है। मेरे एक परिचित हैं। उन्होंने अपनी इस बुरी आदत के कारण अपनी टांगें तुड़वा ली हैं। अब बेचारे जीवन भर के लिए दूसरों के मोहताज हो गए हैं। हुआ यह कि उन्हें एक आवश्यक कार्य से दूसरे शहर जाना था। पर समय के वे कभी पाबन्द नहीं हुए और रेलगाड़ी देर से आने वाले के लिए रुकती नहीं। वे प्लेट कर्म पर पहुँचे ही थे कि गाड़ी छूट गई। उन्होंने भागकर चलती गाड़ी पर चढ़ने का प्रयत्न किया और गिर पड़े। दोनों टांगें कुचली गईं। अब पछताते हैं।

जो वायदा करो, मन में जो निश्चय करो, उसे अवश्य पूरा करो। आप किसी से कहते हैं कि मैं कल दस बजे आपके पास आऊँगा। किन्तु पहुँचते नहीं। उधर दूसरा आदमी 11 बजे तक आपकी प्रतीक्षा करता रहता है। दूसरे दिन आप याद न रहने का बहाना करके क्षमा मांगने लगते हैं। यह अच्छी बात नहीं है।

बहुत से लोग, यदि उन्हें किसी काम में देर हो जाती है, तो कहने लगते हैं कि इस बार देर हो गई, किन्तु मैं भविष्य में कभी देर नहीं करूँगा। यह पहला अवसर था, इस बार देर हो

गई, क्षमा कर दीजिए। ऐसे लोग भूल करने और क्षमा मांगने के अभ्यस्त हो जाते हैं। वे हर बार भूल करेंगे और हर बार क्षमा मांगने लगेंगे।

इस प्रकार झूठे वायदों से खुद को और दूसकों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

यदि जीवन में कुछ बनना चाहते हो, कुछ कर दिखाना चाहते हो तो जिस काम के लिए जो समय निश्चित करो, उसी समय उसे कर डालो। यदि प्रातः पांच बजे उठने का समय निश्चित करके सोते हो तो ठीक पांच बजे उठो। यदि किसी से 5 बजे मिलने का प्रोग्राम है तो ठीक 5 बजे तक पहुँच जाओ।

आज हमारे देश की यह दशा है कि कोई भी कार्यक्रम हो, उसका प्रोग्राम बनाते समय प्रबन्धक सोचते हैं कि जो समय जनता को बताया है उससे कुछ देर बाद जाएं। दूसरी ओर लोग सोचते हैं कि जो समय लिखा है, उस समय तो प्रोग्राम शुरू होगा नहीं, घण्टा भर लेट ही शुरू होगा, इसलिए आगे जा कर क्या करें। प्रबंधकों को व्याख्यान देने वाले और श्रोताओं पर भरोसा नहीं है और श्रोताओं को प्रबंधकों और व्याख्यान देने वालों के समय पर कार्यक्रम चालू करने का विश्वास नहीं है। यह है हमारे देशवासियों का राष्ट्रीय चरित्र। हमारे कुछ साथी तो जब किसी काम में घण्टे की देर करते हैं और उन्हें कहा जाता है कि ऐसा क्यों किया ? तो हजरत बड़ी शान से फरमाते हैं कि यह देशी टाईम है।

मेरे एक सहकर्मी हैं, वे हमेशा हर काम में लेट हो जाते हैं। किन्तु इसका कारण वे सदा ही बताते हैं कि उनके पास घड़ी नहीं है। इनसे मैंने एक दिन पूछ ही लिया- “मित्र, घड़ी न होने से कभी-कभी ऐसा भी तो होना चाहिए कि समय से बहुत पहले ही आ पहुँचे।” कहने और दिखाने के लिए आज हजारों लोगों के पास घड़ियां हैं। परन्तु कितने ऐसे हैं जो उनसे पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं।

यह मानी हुआ बात है कि जो छात्र अपना कार्य निश्चित समय पर करते हैं, वे कभी फेल नहीं होते।

मान लीजिए कि आपको गणित कम आता है और हिन्दी बहुत अच्छी आती है। हिन्दी की पुस्तक में मन खूब लगता है और उन्हें छोड़ने को जी नहीं चाहता। आप हिन्दी पढ़े जाते हैं और सोचते हैं कि यह पाठ पूरा हो जाए तो फिर गणित पढ़ूंगा, आज तो हिन्दी में खूब मन लगा रहा है। दूसरे दिन भी कोई नया बहाना ढूँढ लेते हैं और तीसरे दिन सोचते हैं कि खैर, आज का दिन तो गया, कल गणित शुरू करेंगे। जब किसी काम का समय आए, बाकी सब कामों को छोड़कर उस समय उस में लग जाना चाहिए। कुछ दिन लगातार इस तरह करते रहने से मन अपने आप लगने लगता है।

* अभ्यास *

1. समय का क्या महत्त्व है ?
2. समय की पाबन्दी न रखने से क्या हानि होती है ?
3. जीवन में कुछ बनने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?